भगवद् गीता का ज्ञान – (6)

" श्रद्धावान मनुष्य को परम शान्ति और श्रद्धाहीन का पतन "

श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के चौथे अध्याय के 39वें और 40वें श्लोकों में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि ईश्वर में श्रद्धा रखने वाले मनुष्य को परम शान्ति प्राप्त होती है और, इसके विपरीत, श्रद्धाहीन और मन में संशय रखने वाले मनुष्य का पतन हो जाता है। ये दोनों श्लोक अर्थ सहित नीचे दिए जा रहे हैं --

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥४:३९॥

अर्थात - "संयमी, कर्त्तव्य-परायण और श्रद्धावान मनुष्य परम-ज्ञान (अर्थात, आत्म-ज्ञान) को प्राप्त होता है तथा ज्ञान प्राप्त होने पर वह तत्काल परम-शान्ति को प्राप्त हो जाता है।" **(गीता – 4:39)**

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः॥४: ४०॥

अर्थात - "विवेकहीन, श्रद्धा-रहित व संशय-युक्त मनुष्य का परमार्थ-मार्ग (ईश्वरीय-मार्ग) से पतन हो जाता है। ऐसे संशय-युक्त मनुष्य के लिए न यह लोक है , न परलोक है और न सुख ही है।" **(गीता – 4:40)**